



आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी विरचित ‘मानवी बालोपन्यास’ के आलोक में मानव मूल्य

सुमन

शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग (बिड़ला परिसर)
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखण्ड) 246174
फोन- 9105528879

Email- skm43773@gmail.com

शोध सार -

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा कल्पित यह ‘मानवी’ बाल उपन्यास मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत है, आधुनिक संस्कृत साहित्य जगत् में अपनी आधुनिक शैली की उपन्यास विधा में लिखा गया यह बालोपन्यास महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें अपने झुण्ड से बिछुड़ी हुई, राजहंसिनी और रघु नाम के बालक की सुभग मैत्री की कहानी है जिसके मध्य में कई पात्र आते हैं और उपन्यास से जुड़ते चले जाते हैं। इस उपन्यास में मनुष्य के मन के उतार-चढ़ाव को दिखाते हुए अन्त में सभी पात्रों में मानवीय गुणों को धारण करते हुए बताया गया है। उपन्यास में आगे विविध घटनाओं के माध्यम से पशु-पक्षी का प्रेम, ईमानदारी, सहयोग, कृतज्ञता, सत्यता, प्रियतम प्रेम, विरह में प्रतीक्षा, किसी एक के प्रति निष्ठाभाव से समर्पण होने को बताया गया है। इस उपन्यास में एक ओर प्रकृति द्वारा की गई सुन्दर चेष्टाओं को बताया गया है वहीं दूसरी प्रकृति के भीषण असन्तुलन को दिखाने का प्रयास किया गया है।

सम्पूर्ण जगत् में मानवीय मूल्य महनीय हैं, मानवीय मूल्य किसी व्यक्ति, समाज एवं उसकी संस्कृति की उच्चता के परिचायक होते हैं। ‘मानवी’ बालोपन्यास में प्रतिपादित मानवीय एवं नैतिक मूल्य देश, काल और धर्म में नहीं बँधे हुए हैं अपितु सार्वभौमिक तथा सर्वकालिक हैं। इसलिए मानव

का मार्गदर्शन करता हुआ यह बालोपन्यास आधुनिक समय में कल्याणकारक बातों को बताते हुए, उपन्यास में उपस्थित पात्रों द्वारा आदर्श संस्कारों एवं मानवीय मूल्यों को बताता है।

मुख्य शब्द- आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, मानवी बालोपन्यास, मानव मूल्य, नैतिक मूल्य।

संस्कृत वाङ्मय के अनुपम साहित्य में दया, शान्ति, सन्तोष, परोपकार, त्याग, सत्य परायणता, क्षमा, सहिष्णुता, सहृदयता, अहिंसा, प्रेम आदि समय-समय पर अहर्निश देखने को मिलते हैं, इन्हीं मानवीय गुणों से मनुष्य का समग्र विकास होता है। उपनिषद् एक ओर जहाँ हमें सत्यता के लिए ‘सत्यं वदः’¹, आचार्य के प्रति सम्मान ‘आचार्य देवो भवः’², अतिथि सत्कार ‘अतिथि देवो भवः’³, सत्सङ्गति जैसे मानवीय मूल्य की शिक्षा देता है, वहीं दूसरी ओर वैदिक साहित्य में पारिवारिक सौहार्द, वसुधैव कुटुम्बकम्, स्वदेशप्रेम, प्रकृतिप्रेम सामूहिक एकता और सहयोग की भावना आदि लक्षित होते हुए परिलक्षित होती हैं यथा –

समानी वा आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वःसुसहासति॥⁴

इसी परम्परा में आगे साहित्यकार आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा रचित ‘मानवी’ बालोपन्यास में प्रत्येक पात्रों को मानवीय मूल्यों के सुन्दर दृश्यबन्ध रचते हुए दिखाया गया है –

सत्यता- ‘मानवी’ बालोपन्यास में सत्यता का सुन्दर उदाहरण देखने को मिलता है जहाँ एक प्रसंग में रघु नामक पात्र द्वारा असत्य कहने पर राजहंसिनी मानवी का कण्ठ झुलस उठता है, अर्थात् यदि हमारा तादात्म्य प्रकृति के साथ है और हम असत्यभाषण भी कर रहे हैं तो इसका बुरा प्रभाव उस पर भी दिखाई पड़ता है यह हम उपन्यास के माध्यम से देखते हैं।

यथा – “मानवी अवदत् भो रघो, त्वया मिथ्या किमर्थम् उक्तम् यद् मया पक्षीविशारदात् श्रीमतः शारदाप्रसादत् पक्षीणां भाषा अधीता? तव असत्येनाहं दग्धा। असत्यं वदतः तव श्वासाः मम

¹ तैत्तरीयोपनिषद् 11 अनुवाक

² वही

³ वही

⁴ ऋग्वेद 10.191.4

कण्ठम् अस्पृश्यन् पश्य मम् कण्ठम्।⁵ मानवी कथञ्चित् महता कष्टेन तम् अब्रवीत्- अनेन सम्मर्देन मम प्राणाः कण्ठमागताः अत्र न स्थास्यामि रघो माम् इतो नय मां नर्मदायाः तटं नय”।⁶

इसी प्रकार सत्य प्राप्ति का प्रसङ्ग यजुर्वेद में व्रत नियम आदि को सत्य की उपलब्धि का साधन माना गया है इस मन्त्र में बताया गया है व्रत से मनुष्य को दीक्षा, दीक्षा से दक्षिणा, दक्षिणा से अपने जीवन के आदर्शों में श्रद्धा और श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है –

व्रतेन दीक्षा माप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।

दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥⁷

सत्य बोले प्रिय बोलें पर अप्रिय सत्य न बोलें और प्रिय असत्य भी न बोलें यही सनातन धर्म की रीति है ऐसा मनुस्मृतिकार लिखते हैं –

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एषधर्मः सनातनः॥⁸

इसी प्रकार कालिदास रघुवंशम् में बताते हैं कि सूर्यवंशी राजाओं द्वारा धन का सञ्चय दान मात्र और प्रजा की भलाई के लिए किया जाता था। इसी प्रकार सत्य के लिए कम बोला जाता था। क्योंकि एक प्रमुख कहावत लोक में प्रचलित भी है कि जरूरत से अधिक सत्य भी झूठ ही होता है –

त्यागाय संभृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।⁹

ऋषियों की वाणी अनमोल हैं, अहिंसा मनुष्य के जीवन को सुन्दर बनाता है। यजुर्वेद का वर्णित यह स्वस्तिवाचन मन्त्र विश्व में शान्ति के सन्देश को प्रसारित करता है –

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः

शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म

शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥¹⁰

आज्ञा पालन- मानवी बालोपन्यास के सन्दर्भ में एक प्रसङ्ग में बताया गया है कि विद्यालयी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् भी प्रोफेसर रस्तोगी में सलीम अली के प्रति शिष्यत्व भाव विद्यमान है इसलिए

⁵ मानवी संस्कृते बालोपन्यासः पृ.33

⁶ मानवी संस्कृते बालोपन्यासः पृ.32

⁷ शुक्लयजुर्वेद 19.30

⁸ मनुस्मृति 4.138

⁹ रघुवंशम् 1.7

¹⁰ यजुर्वेद

सलीम अली के एक फोन करने पर एक आज्ञाकारी विद्यार्थी की भाँति उनको भोपाल हवाई अड्डे लेने जाता है और नन्दनपुर गाँव में राजहंसों के मिलने तक उनके साथ ही रहता है-

“रस्तोगीवर्यो भोपालस्य विमानपत्तने मिलितः। तं दृष्ट्वा सलीमः अलीः कठोरस्वरेण जगाद- अरे रस्तोगिन्, त्वया एतत् किं कथितं यद् कनाडादेशागताः राजहंसाः? इदं मूर्खतापरकं वचनं कथं तव मुखान्निः सृतम्? रस्तोगी सलज्जं विहसन् सादरम् अवदत्- मम् भ्रान्तिः सर! मया अनुमानं कृतम्”।¹¹

इसी प्रकार निरुक्तकार कहते हैं कि विद्याध्ययन के पश्चात् गुरुओं का आदर और आज्ञापालन करना चाहिए। जो शिक्षा पूर्ण करने के बाद गुरुओं का आदर नहीं करते उनकी विद्या पूर्ण रूप से फलित नहीं होती यथा –

अध्यापिता ये गुरुं नाद्रियन्ते विप्रा वाचा मनसा कर्मणा वा।

यथैव ते न गुरोर्भोजनीयास्तथैव तान् भुनक्ति श्रुतं तत्॥¹²

अथर्ववेद में वर्णित मन्त्र बताता है कि किस प्रकार हमें आज्ञा पालन करके मानवीय मूल्यों को बढ़ाना चाहिए –

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।

जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्॥¹³

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में इसी प्रकार गुरुजनों की आज्ञा पालन और अपने से छोटे के प्रति उदारभाव रखने में अथाह शान्ति प्राप्त होती है यथा –

शुश्रूषस्व गुरुन् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने

पत्युर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।

भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी।

यान्त्येवं गृहिणीपदं युवययो वामाःकुलस्याधयः॥¹⁴

उपनिषदों में तो सर्वत्र मनुष्य को उच्चतम मूल्यों पर चलने का सन्देश दिया जाता है, ईशावास्योपनिषद् का मन्त्र अनेक मानवीय मूल्यों को व्यक्त करते हुए यह बताता है –

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चित् जगत्यां जगत्।

¹¹मानवी संस्कृते बालोपन्यासः पृ.3

¹² निरुक्त 2.1.3

¹³ अथर्ववेद 3.30.3

¹⁴ अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4.18

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥¹⁵

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने मानवी उपन्यास में दाम्पत्य प्रेम की अभिव्यञ्जना की है, इसीप्रकार मित्र के सम्बन्ध में, भाई के सम्बन्ध में, प्रेम का व्यापक एवं सजीव चित्रण किया है।

आत्मवत् भाव- मानवी उपन्यास में कवि प्रकृति एवं मनुष्य के मध्य दुर्लभ स्नेह का वर्णन करता है, जो प्रायः मनुष्यों के स्वभाव में दिखाई नहीं देता। रघु द्वारा राजहंसिनी के माध्यम से माध्यम से कवि मानों सम्पूर्ण प्रकृति के प्रति आत्मीयता का सन्देश देते हुए कहता है –

“सर्वे मनुष्या त्वादृशाः न भवन्ति सरलाः। त्वं तु अस्माभिः हंसैः समः निर्मलहृदयः। अथ रघुः मानव्याः कृते चिन्तितः। स तामाह- तर्हि त्वमत्र किं कुर्याः अस्मिन् गृहने कुञ्जे? त्वं मया आयाहि मम गृहे वस। अहं त्वाम् अवेक्षिष्ये। न अहमत्रैव तिष्ठामि। तव गृहं परितो दुष्टाः बालकाः सञ्चरन्ति। रघुः अत्यन्तं करुणया विह्वलो जातः। तर्हि किं करोम्यहं तव हिताया? स मानवीं च आत्मानं च अवदत्”।¹⁶

मानवी बालोपन्यास में प्रकृति प्रेम द्रष्टव्य है जब-जब मनुष्य प्रकृति के प्रति सहृदय हुआ है प्रकृति ने भी मानव के प्रति आत्मीयता प्रकट की है। मानवी बालोपन्यास में प्रकृति प्रेम का सुन्दर उदाहरण देखने को मिलता रघु नामक पात्र अपने हिस्से का दूध खुद न पीकर मानवी नामक राजहंसिनी को पिलाता और तत्पश्चात् उसका छोड़ा दूध स्वयं पी जाता-

“सुहागिनी देवी प्रातः उत्थाय गोलुं मोचयति, स स्वमातुः गङ्गा दुग्धं पिबति, अनन्तरं सा गङ्गीं दोग्धि। सुहागिनी देवी रघुं बलाद् दुग्धं पाययति, अवशिष्टेन चुलुकमितेन दुग्धेन चायं निर्माय स्वयं पिबति। यतः प्रभृति इयं हंसिनी गृहमागता, रघुः दोहने जाते तत्कालं तस्यै दुग्धं दातुं त्वरते। सा प्रथमं पिबति, तस्या उच्छिष्टमेव असौ तस्मादेव शरावात् पिबति”।¹⁷

करुणा- एक बार मानवी (राजहंसिनी) और गङ्गी (गाय) के न मिलने को लेकर रघु पूरे घर में उनको खोजता रहता है और बिना कुछ खाएँ पिएँ मानवी के घर लौटने की प्रतीक्षा करता है यहाँ पर मानव का प्रकृति के प्रति आत्मीयता का भाव देखने को मिलता है-

“रघु गृहाभ्यन्तरम् अपश्यत्। गृहाद् बहिः एकः एरण्डवृक्षः वर्तते। सा तस्मिन् अपि क्वचिद् उड्डीय उपविशति। कियानपि अन्धकारः स्यात्, मानव्याः अत्यन्तम् उज्ज्वलः शुभ्रः कायस्तु दृश्येत एव किन्तु मानवी एरण्ये नास्ति, अपि नाम सा उड्डीय छदौ उपविष्टा, रघुः

¹⁵ ईशावास्योपनिषद् 1

¹⁶ मानवी संस्कृते बालोपन्यासः पृ. 19

¹⁷ मानवी संस्कृते बालोपन्यासः पृ. 42

व्याकुलः कथञ्चित् छदौ आरुह्य अपश्यत् तत्रापि मानव्याः किमपि चिन्हं न विलोक्यते। रघु पुनरपि आह्वयत्- मानवि! मानवि!!”।¹⁸

इसी प्रकार का वर्णन अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शकुन्तला का प्रकृति प्रेम दिखाई पड़ता है यदि मनुष्य पशु-पक्षियों के साथ सहृदय रहता है तो प्रकृति भी मनुष्य के प्रति आत्मीयता प्रकट करती है-

उद्गलितदर्भकवलाः मृगयः परित्यक्तनर्तना मयूराः।

अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः॥¹⁹

मानवी बालोपन्यास में मानवी राजहंसिनी के प्रति माता की वत्सलता के द्वारा मानवीय मूल्य निर्वाह किस प्रकार किया जाता है यह बताते हुए प्रो. त्रिपाठी कहते हैं-

“सुहागिनीदेव्याः नयनयोः अश्रवः उद्गताः। सा गद्गदया गिरा रघुम् अवदत्- मानवीं कोपि न स्पृशेत् इति अवेक्षणीयम्। इयम् अन्यत्र उड्डीय न गच्छेत्। विदिशानगरी अस्याः कृते अपरिचिता। एनां सदैव अङ्के धारयिष्यसि”।²⁰

प्रकृति के प्रति संवेदना- भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत प्रकृति को एक नित्य, गतिशील और संवेदनशील इकाई के रूप में देखा जाता है, जो मानवीय जीवन के संरक्षण और विकास हेतु अत्यन्त आवश्यक तत्त्व के रूप में विविध भूमिकाओं का निर्वहण करती है। यही कारण है कि भारतीय प्रज्ञा आदिकाल से मनुष्य और प्रकृति के अन्तर्सम्बन्धों के प्रति अत्यन्त जागरूक और सचेत दिखाई पड़ती है। हमारे पूर्वजों ने प्रकृति एवं उसके समस्त उपादानों को आध्यात्मिक रूप प्रदान करने का प्रयास किया है, जिससे सनातन संस्कृति के मूल मान्यताओं के साथ प्राकृतिक तत्त्वों का अविच्छेद्य और अभिन्न सम्बन्ध हमारे अस्तित्व के साथ जुड़ गया है।

हम सभी प्राणी पृथ्वी से आश्रय पाते हैं और हमारा जीवन पृथ्वी के विविध संसाधनों पर आश्रित है-

“माता भूमिः पुत्रोऽयं पृथिव्याः”।²¹

अर्थात् पृथ्वी मेरी माँ और मैं उसका पुत्र, पृथ्वी और विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं का सम्बन्ध अभिव्यक्त होता है।

वैदिक मन्त्रों का पाठ आदि से कर्ण इन्द्रियाँ झंकृत होकर मन स्थिर होता है। विषाक्त गैस होने वाले प्रदूषण को यज्ञ करके सन्तुलन में लाया जा सकता है। अथर्ववेद में कहा गया है-

¹⁸ मानवी संस्कृते बालोपन्यासः पृ. 44

¹⁹ अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4.12

²⁰ मानवी संस्कृते बालोपन्यासः पृ. 63

²¹ अथर्ववेद 12.1.12

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णु शं प्रजापतिः।

शं नो इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो भवत्यर्मा॥²²

इसी प्रकार कालिदास प्रकृति के साथ अगाध प्रेम को बताते हुए कहते हैं, वह प्रकृति को सजीव व मानवीय भावों से परिपूर्ण मानते हैं –

अस्ति मे सोदर स्नेहोयप्येतेषु।²³

उद्गलितदर्भकवलाः मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।

अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः॥²⁴

अर्थात् शकुन्तला के वियोग में मृगियों ने घास खाना छोड़ दिया है, मोरों ने नाचना बन्द कर दिया है एवं लताएँ पीले पत्ते रूपी आंसू गिरा रही हैं। ऐसा प्रकृति प्रेम मानवी उपन्यास में भी वर्तमान समय में अत्यन्त प्रासंगिक है।

उपन्यास में आगे उद्दण्ड सघोष के प्रति मानवी के अच्छे व्यवहार को बताकर कवि यह बताना चाहता है कि हमें किसी से द्वेष नहीं करना चाहिए, सबसे मैत्री भाव रखना चाहिए –

“सहसा त्रयो माणवकाः प्रधावन्तस्तत्र आगताः। मानवी सघोषं सघोषं बोधयन्ती प्राह-
अरे सघोष? पलायस्व, पलायस्व। बालकास्तव पृष्ठत आयान्ति। ते त्वां निगृहीष्यन्ति। सघोषो
द्रुतम् उत्प्लुप्य कूपे न्यमज्जत्। माणवकाः आक्रोशन्ति स्म- अरे गतः! गतः!! कूपे कूर्दितः! हन्त
हन्त महान् अवसरः हस्ताद् भ्रष्टः!!”²⁵

अर्थात् जब सघोष नाम के उद्दण्डी मेंढ़क को गाँव के शरारती बच्चे पकड़ने को दौड़ते हैं तो मानवी नाम की राजहंसिनी उसे वहाँ से भाग जाने को कहती है जिससे वह उन बच्चों के हाथ से छूट जाता है,

सुमित्र की प्रशंसा में प्रचलित श्लोक सुभाषितभाण्डागारम् में भी इस प्रकार मिलता है यथा –
हमारे शरीर के अङ्ग शरीर की रक्षा करते हैं उसी प्रकार विपत्ति काल में बिना विचारे करके जो सहयोग करे वही सच्चा मित्र है-

कराविव शरीरस्य नेत्रयोरिव पक्ष्मणी।

अविचार्य प्रिय कुर्यात्तन्मित्रं मित्रमुच्यते॥²⁶

²² अथर्ववेद 19.9.6

²³ अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1.48

²⁴ अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4.12

²⁵ मानवी संस्कृते बालोपन्यासः पृ.8

²⁶ सुभाषितरत्नभाण्डागारम् सुमित्रप्रशंसा श्लो.1

यह समस्त प्रकृति हमें किसी न किसी रूप में परोपकारित करती है इसलिए हमारा यह शरीर भी परोपकार के लिए ही बना है-

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।

परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥

निष्कर्ष- इस शोध पत्र के द्वारा मानवीय मूल्य को बताने का उद्देश्य मात्र यही है, कि हम सभी के द्वारा मानवीय मूल्य को अपने जीवन में शामिल किया जाए। ताकि बढ़ते भौतिकतावाद के साथ-साथ जिस तरह मानव मूल्यों में गिरावट देखने को मिल रहें हैं। उसको देखते हुए इनकी आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। मानवीय मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात करने से हम पाते हैं कि हम मानसिक रूप से स्वस्थ होने के साथ-साथ अच्छे व्यक्तित्व का विकास भी करते हैं। जिससे एक स्वच्छ और सन्तुलित समाज का निर्माण होता है। लोगों में सकारात्मक ऊर्जा की बढ़ोत्तरी होती है। साथ ही समाज में बढ़ रही कुरीतियों जैसे- दिखावा करने की प्रवृत्ति, हिंसा, अन्धविश्वास, रुढ़िवादिता आदि को समाप्त करने में सहायता मिलती है। स्व कल्याण और राष्ट्र की प्रगति के लिए यह भी जरूरी है कि हम सभी इस दिशा में अपने कर्तव्यों का भली भाँति निर्वाह करें ताकि यह सभी मानवीय मूल्यों केवल लेख, थीसिस, और शोधपत्रों में ही न सिमट कर रह जाएं जिससे हम केवल नाममात्र के मानव न रहे, अपितु मानवीय गुणों से युक्त मानव बनें।

सन्दर्भग्रन्थसूची –

1. मानवी संस्कृते बालोपन्यासः, प्रणेता राधावल्लभः त्रिपाठी, शिवालिक प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, 2021
2. ईशादि नौ उपनिषद् शाङ्करभाष्यार्थ, हरिकृष्णदास गोयन्दका, संवत् गीताप्रेस, गोरखपुर, 2010
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, राजदेवमिश्र, प्रकाशक घनश्यामदास एण्ड सन्स चौक, फैजाबाद, 2000 ई.
4. विशुद्ध मनुस्मृति, सुरेन्द्र कुमार, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, 2017
5. निरुक्त, स्वामी ब्रह्ममुनिः परिव्राजको विद्यामार्तण्डः, आर्ष साहित्य मण्डल लि०, अजमेर 1966 ई०
6. यजुर्वेद, श्रद्धानन्द वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल काँगड़ी हरिद्वार, 2008
7. अथर्ववेद, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धमार्थ न्यास राजस्थान, 2063 विक्रमी संवत्, 2007 ई०

